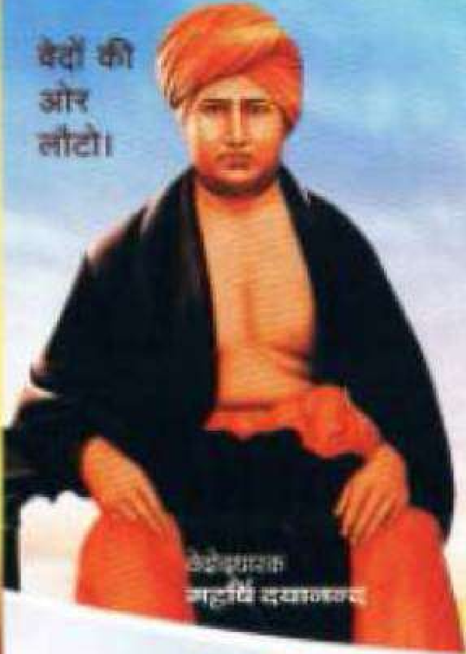

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक
पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १९ अंक ०८ - १० सितम्बर २०१९

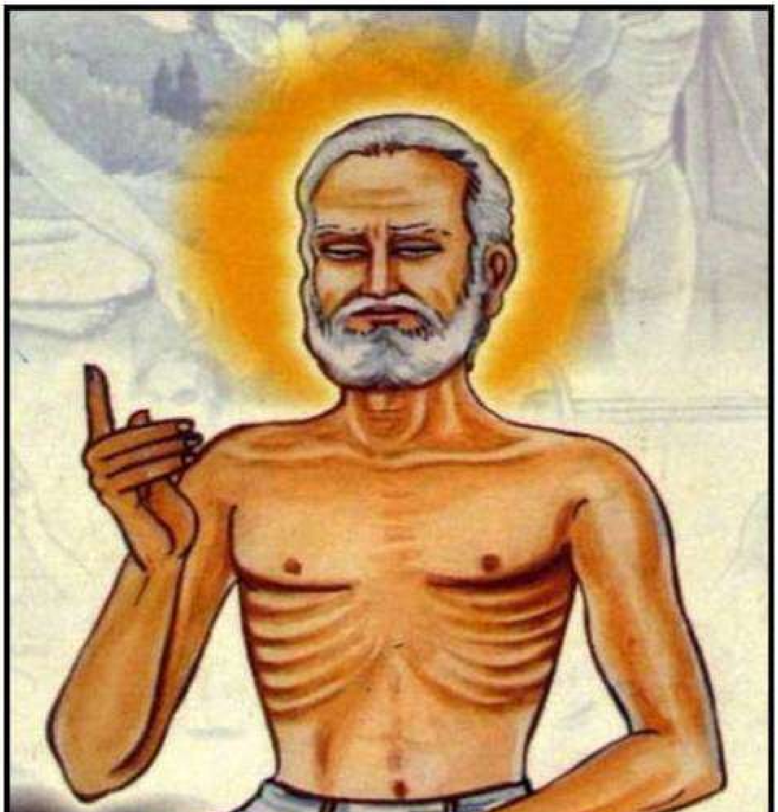

गुरुवर विरजानन्दजी दण्डी

१५१ वें निर्वानदिवस पर शत् शत् वन्दन..!

✻ श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव-२०१९ ✻

सम्भाजीनगर आर्य समाज में आयोजित 'पर्यावरण शुद्धि यज्ञ' में पूर्णाहुतियां प्रदान करते हुए विद्वान, यजमान व आर्यजन।

किल्लेधारूर की आर्य समाज में यज्ञ करते हुए यजमान। साथ में वैदिक विद्वान् स्वामी अखिलानन्दजी एवं पं.संदीपजी वैदिक।

आर्य समाज हिंगोली में श्रावणी पर्व पर आहुतियां समर्पित करते हुए आर्यजन।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२० | कलि संवत् ५१२० | विक्रम संवत् २०७६
दयानन्दाब्द १९५ | भाद्रपद/अश्विन | १० सितम्बर २०१९

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे
(९८२२३६५२७२)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक **प्रा.देवदत्त तुंगार**(९३७२५४१७७७), **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर**(९८८१२१५६१६), **ज्ञानकुमार आर्य**(९६२३८४२२४०), **राजवीर शास्त्री** (९८२२९९००११)

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ४
२) सम्पादकीयम् ५
३) ऐसे थे गुरुवर विरजानन्द दण्डी ७
४) हमारी महाराष्ट्र की वेदप्रचार यात्रा १२
५) श्रावणी वेदप्रचार-धन्यवाद विज्ञप्ति १४
६) बनें विश्व की भाषा हिन्दी १५
७) समाचार दर्पण १६
८) ...और चल बसे मन्त्री श्री वासवानी........ १७

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) हैदराबाद मुक्तिसंग्रामात आर्य समाजाचे योगदान २०
३) असा झाला श्रावणी वेदप्रचार २४
४) शोकवार्ता २८
५) निवेदन व सूचना २९
६) सभेचे मानवकल्याणकारी उपक्रम........ ३०

✻ प्रकाशक ✻
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

✻ मुद्रक ✻
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिकगर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगंध

सच्चा गणपति..!

गणानान्त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्।।

(ऋग्वेद २/२३/१)

पदार्थान्वय– हे (**ब्रह्मणाम्**) बडे-बडे धनों में (**ब्रह्मणस्पते**) धन के स्वामी हम लोग (**गणानाम्**) गणनीय मुख्य पदार्थों में (**गणपतिम्**) मुख्य पदार्थों के स्वामी (**कवीनाम्**) उत्तम बुद्धि वालों में (**कविम्**) सर्वज्ञ और (**उपमश्रवस्तमम्**) उपमा जिससे दी जाती है, ऐसे अत्यन्त श्रवणरूप (**ज्येष्ठराजम्**) ज्येष्ठ अर्थात् अत्यन्त प्रशंसित पदार्थों में प्रकाशमान (**त्वा**) आप परमेश्वर को (**आ, हवामहे**) अच्छे प्रकार स्वीकार करते हैं। आप (**ऊतिभिः**) रक्षाओं से (**श्रृण्वन्**) सुनते हुए(**नः**) हम लोगों के (**सादनम्**) उस स्थान को कि जिसमें स्थिर होते हैं, वैसे (**सीद**) स्थिर हूजिये।

भावार्थ:- हे मनुष्यों! जैसे हम लोग सब के अधिपति सर्वज्ञ सर्वराज अन्तर्यामी परमेश्वर की उपासना करते हैं, वैसे तुम भी उपासना करो।

(महर्षि दयानन्दकृत ऋग्वेद भाष्य)

-* महाराष्ट्र सभा के आगामी कार्यक्रम *-

- **प्रान्तीय सभा की त्रैमासिक अन्तरंग बैठक अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह में आर्य समाज उस्मानाबाद में होगी।**
- **स्व.विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति राज्य. विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा – २४ नवम्बर २०१९**
- **सौ.व श्री चिल्ले गौरव राज्य.महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा – २९ दिसम्बर २०१९**
- **पूर्ण दिसम्बर माह में स्कूल व कॉलेजों के छात्रों के लिए 'वैदिक व्याख्यानमाला'**

सम्पादकीयम् अब बहे राष्ट्रीय विचारों की धारा..!

स्वतन्त्रता के ७२ वर्षों बाद समूचा भारत देश अब एक हो गया है। सक्षम सरकार, दूरदर्शी नेतृत्व व प्रखर राष्ट्रीय विचारों के कारण जम्मू-कश्मीर से ३७० धारा हटाई गयी और अखण्डित भारत का एक नया क्रान्तिकारी इतिहास लिखा गया। यह ऐतिहासिक कदम उठानेवाले प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी एवं गृहमन्त्री श्री अमितजी शहा का हर भारतवासी हृदय से अभिनन्दन करता है। कोई भी कठोर निर्णय लेने के लिए केवल भारी बहुमत या साहस ही काम नहीं आता, अपितु उसके लिए दृढ इच्छाशक्ति व प्रखर राष्ट्रीय नीतियों की भी आवश्यकता होती है। अन्यथा १९८० में और १९८४ में क्रमश: इन्दिराजी गान्धी एवं राजीव गान्धी के कार्यकाल में भी यह कार्य पूर्ण हो सकता था, क्योंकि उनकी कांग्रेस सरकारें भी उस समय बहुमत से सत्ता में आयी थी। इन्दिराजी में तो साहसपूर्ण निर्णय लेने का अनूठा गुण था, किन्तु जम्मू व कश्मीर के विषय में उनकी नीति अस्पष्ट एवं केवल परम्परावादी होने के कारण वे यह फैसला ले नहीं सकी। बीच के वाजपेयीजी के तथा पिछली मोदी सरकार के कार्यकाल में भी बहुमत न होने कारण यह निर्णय पीछे रह गया था। अब जब कि मोदीजी की दुबारा सरकार बनी और वह पूरे बहुमत के साथ... तभी उनमें निर्णय लेने का बल बढा! परिणामस्वरूप जुबानी तीन तलाक के विधेयक को पारित कराने के साथ ही जम्मू-कश्मीर से धारा ३७० व ३५ए को हटाने का फैसला लेकर भारत को एकसंघ बनाया।

महान् कार्य तभी सफल होते हैं, जब उनके मूल में त्याग व समर्पण की भावना हो! धारा ३७० को हटाने के पक्ष में हमारें कईं पूर्व नेताओं व करोडों भारतीयों की दृढ आकांक्षा श्रद्धा व निष्ठा रही है। विख्यात देशभक्त श्यामाप्रसादजी मुखर्जी का अपूर्व बलिदान विशेषरूप से इसकी पृष्ठभूमि रहा है, जिनका आज हम श्रद्धापूर्ण स्मरण करते हैं। क्योंकि इन्हीं हौतात्म्य के कारण भाजपा पहले से ही अपने चुनावी अजेण्डे में ३७० धारा खत्म कराने का मुद्दा सम्मिलित करती रही है, जिसे श्री मोदीजी व श्री शहाजी ने अपने अपूर्व नियोजन व सामर्थ्य द्वारा पूर्णत्व प्रदान किया। समग्र राष्ट्र के लिए यह फैसला जिस तरह आनन्दवर्धक रहा, उसी तरह कश्मीर की जनता में क्या वह प्रसन्नता या सहजता दिखाई पडी? गिने-चुने सामान्य लोगों को छोडकर क्या वहाँ के सभी लोग इस निर्णय के स्वागत में खडे

रहें? यदि इसका उत्तर 'नहीं' में मिलता हो, तो उसे 'हां' में बदलने के लिए हम सभी को बहुत कुछ करना बाकी है। भूप्रदेश से भारतीयता के साथ जुड गये, लेकिन भावनाओं से कितने जुडे? यह भी देखना होगा। इसलिए वहाँ राष्ट्रीय विचारों व संस्कारों की धारा प्रवाहित करनी पडेगी। क्योंकि ७० सालों में कश्मीरियों के मन में भारत के प्रति नफरत की भावना भडकाने व स्वयं को अलग रखने की प्रवृत्तियों ने कोई सर छोडी नहीं थी। इसलिए तो वहां का नौजवान व छात्र अपने ही सुरक्षाबलों या सैनिकों पर पत्थर बरसाता रहा। मोदीजी के इस कल्याणकारी निर्णय से तो कश्मीरवासियों को सर्वाधिक खुशी होनी चाहिए। जैसे कोई पिंजडे में बन्द पंछी उसे आझाद कराने पर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव करता हो, वैसी ही बेहद खुशी वहां के नागरिकों, युवाओं व बच्चों में दिखाई देनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि विगत ७० वर्षों तक वहाँ की जनता को देशप्रेम की भावना व संस्कृति का पाठ पढाया नहीं गया। इसका मूल कारण थी धारा ३७०! इसके हटने से देश का मुकुटमणि भारत के साथ जुड गया।

अब इससे आगे विचारों व भावनाओं से कश्मीरियों जोडने का प्रयास सरकार के साथ हम सब भारतवासियों का है। अब सही परीक्षा तो यहाँ से आगे शुरु होती है । शिक्षाप्रसार, उद्योग-व्यापार तथा अन्य सुविधाओं को लेकर जम्मू-कश्मीर में विकास की गंगा बहाने के साथ ही अब वहां के जनता की मानसिकता को बदलने का और उन्हें भारतीय विचारधारा में लाने का प्रयास होना आवश्यक है। पुलिस या हमारे वीर जवान वहाँ पर कितना प्रयास करेंगे? इसके लिए तो वैचारिक परिवर्तन लाना होगा। हर एक कश्मीरी नौजवान के मन में यह विश्वास जगाना होगा कि सारा भारत हमारा है और हम अखण्ड भारतवासी हैं। प्रधानमन्त्री मोदीजी ने 'सब के विश्वास' का नारा दिया है। अब इस विश्वास की पूर्ति के लिए सभी देशवासियों को प्रयत्न करना है। यदि हम सहज रूप से देखेंगे तो केवल जम्मू-कश्मीर की जनता से ही नहीं बल्कि शेष भारत देश की करोडो जनता के दिलो-दिमाग में जो अविचारों की धारा प्रबल रूप से बह रही है, उसे हटाने के लिए प्रयत्न होने चाहिये। सरकारने तो अपना काम किया, लेकिन अब भारतीय जनमानस और यहां की आर्य समाज सहित सभी सामाजिक संस्थाओं को कश्मीरवासियों के हालात बदलने हेतु मानवीय मूल्यों व राष्ट्रीय विचारों को मात्र प्रसारित करने के लिए आगे आना चाहिए।

- नयनकुमार आचार्य

निर्वाणदिवस (१४ सितम्बर) पर विशेष-

ऐसे थे गुरुवर विरजानन्द दण्डी

– (स्व.) पं.इन्द्र विद्यावाचस्पति

ये स्वामी विरजानन्द जी कौन है? पंजाब में करतारपुर के समीप गंगापुर नाम का एक ग्राम था। उसमें नारायणदत्त नाम का सारस्वत ब्राह्मण रहता था। दयानन्द के गुरु श्री विरजानन्द दण्डी ने उसी के घर जन्म लिया था। बचपन से ही बालक पर आपत्तियों का आक्रमण आरम्भ हुआ। ५ वर्ष की आयु में चेचक की बीमारी ने बालक की आंखें शक्तिहीन कर दीं। ११ वें वर्ष में माता-पिता इस होनहार बच्चे को अनाथ छोडकर परलोक सिधार गये। बालक के पालन-पोषण का बोझ बडे भाई के कन्धों पर पडा। बडा भाई साधारण दुनियादार भाइयों की भांति नासमझ था। वह इस अन्धे अतएव अनुपयोगी भाई की पेट पालना में कोई विशेष लाभ नहीं देखता था। भाई और भावज की कृपा से तंग आकर शीघ्र ही बालक को घर छोडना पडा।

घर से भागकर प्रतिभाशाली युवक ऋषिकेश और हरिद्वार पहुंचा और वर्षों तक विद्याध्ययन तथा तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को संस्कृत करता रहा। हरिद्वार में ही स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की दया से उसे संन्यास मिला। संन्यासी विरजानन्द विद्या की तलाश में हरिद्वार, कनखल, काशी, गया आदि में चिरकाल तक घूमते रहे और विद्वानों से व्याकरण तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। ज्ञानामृत के प्यासे ऋषि दयानन्द के गुरु बनने का अधिकार उसी तपस्वी को हो सकता था, जिसने एक उद्देश्य के लिए तपस्या की हो, किसी उत्तम पदार्थ की खोज में कोने-कोने छान मारे हों। इस दृष्टि से देखें तो स्वामी विरजानन्द जी दयानन्द के गुरु बनने के पूर्णतया अधिकारी थे।

विद्याध्ययन कर लेने पर दण्डी जी ने विद्यार्थियों को पढाना आरम्भ किया। उनके यश का विस्तार चारों ओर होने लगा। विशेषकर व्याकरण में उनका पाण्डित्य बहुत ऊंचे दर्जे का समझा जाता था। उनके पाण्डित्य और मधुर श्लोक-गान से प्रसन्न होकर अलवर के राजा ने कुछ दिनें तक उन्हें अपने यहां रखा। राजा की प्रार्थना पर दण्डी जी यह शर्त करके अलवर गये थे कि प्रतिदिन राजा ३ घण्टे तक अध्ययन किया करेगा। विलासी राजा अपने प्रण को निभा न सका, परन्तु संन्यासी ने अपना प्रण

निभाया। जिस दिन राजा पढने नहीं आया, उससे अगले दिन दण्डी जी का आसन अवलर से उठ गया।

कुछ समय रजवाडों में बिताकर स्वामी विरजानन्द जी ने मथुरा में अपना आसन जमाया। व्याकरण पढने की इच्छा रखनेवाले विद्यार्थी दूर देशों से यहां तक कि काशी से भी-दण्डी जी के पा आते थे। व्याकरण में दण्डी जी का पाण्डित्य अपूर्व हो गया था। इस समय उनके जीवन में एक विशेष परिवर्तन करनेवाली घटना घटित हुई। पडोस में एक दक्षिणी पण्डित रहता था। वह प्रतिदिन मूल अष्टाध्यायी का पाठ किया करता था। दण्डी जी उस समय तक सिद्धान्तकौमुदी, मनोरमा और शेखर को ही व्याकरण का आदि और अन्त समझे थे। मूल अष्टाध्यायी का पाठ सुनकर मानों उनकी आंखे खुल गईं। उन्हें प्रतीत हुआ कि व्याकरण का ऋषि-निर्णीत क्रम कुछ और ही है। अष्टाध्यायी के सूत्र-क्रम को देखते ही उनके हृदय में धारणा हो गई कि कौमुदीकार का बनाया क्रम अस्वाभाविक है और अष्टाध्यायी के महत्त्व को कम करनेवाला है। यह धारणा होते ही दण्डी जी ने दीक्षित के ग्रन्थों की और उनके साथ ही अन्य सब अर्वाचीन व्याकरण-ग्रन्थों का त्याग कर दिया। जनश्रुति है कि उनका यमुना में प्रवाह कर दिया। अष्टाध्यायी का क्रम दण्डी जी को इतना पसन्द आया कि उन्होंने अपने शिष्यों के पास जितने अर्वाचीन ग्रन्थ थे, वे सब फिंकवा या जलवा दिए। अष्टाध्यायी और महाभाष्य इन दो को हृदय के आसन पर बिठा लिया।

दण्डी जी के विचार प्रवाह में भी जोर की ठोकर लगी। वह कौमुदी, मनोरमा और शेखर के प्रवाह में बडे वेग से बहे जा रहे थे। अष्टाध्यायी का मूल सूत्र-क्रम सुनकर और उसका सरल सौन्दर्य देखकर प्रज्ञाचक्षु की आंखे खुल गईं। उन्हें भान होने लगा कि ऋषिकृत व्याकरण का क्रम कौमुदी के घडे हुए क्रम से बहुत उत्कृष्ट है। इतना उत्तम होते हुए भी सूत्र-क्रम गुम क्यों हो गया? कारण यही प्रतीत होता था कि भट्टोजिदीक्षित ने 'सिद्धान्तकौमुदी' बनाकर सूत्रक्रम को पीछे फेंक दिया। इससे दण्डी जी का सारा असन्तोष भट्टोजी दीक्षित पर केन्द्रित हो गया। अष्टाध्यायी और महाभाष्य से उनका प्रेम ज्यों-ज्यों बढता जाता था, भट्टोजी दीक्षित से त्यों-त्यों उन्हें घृणा होती जाती थी।

धीरे-धीरे उनके हृदय में यह निश्चय सा हो गया कि जब तक कौमुदी और उससे सम्बन्ध रखनेवाले ग्रन्थों का प्रचार नहीं रुक जाता, तब तक व्याकरण की

ऋषि-कृत पद्धति का उद्धार नहीं हो सकता। यह विचार दण्डी जी को दरबार में बुलाकर अपने यशस्वी होने का उपाय पूछा। ऋषि-कृत ग्रन्थों के भक्त दण्डी जी के मन में समा गया, उनके दिलपर सवार हो गया। यही विचार दिन का चिन्तन और रात का सपना हो गया। एक बार जयपुर के राजा रामसिंह ने दण्डी ने उत्तर में आदेश दिया कि एक बडी सभा करके देशभर के विद्वानों को एकत्र करो। सभा में इस विषय पर शास्त्रार्थ हो कि व्याकरण का ऋषिकृत क्रम अच्छा है या कौमुदी का? दण्डी जी ने कहा कि मैं उस सभा में सिद्ध करके दिखा दूंगा कि ऋषिकृत क्रम ठीक है और कौमुदी आदि ग्रन्थ अशुद्धियों से भरपूर हैं। दूसरे एक अवसर पर मथुरा के कलेक्टर मि.पोस्टली दण्डी जी से मिलने आये। मि.पोस्टली ने सभ्यता के तौर पर पूछा कि, 'आप क्या चाहते हैं, जो हम कर सकें?' दण्डी जी ने उत्तर दिया कि, **'यदि आप हमारी इच्छा पूरी करना चाहते हैं, तो भट्टोजी दीक्षित के सब ग्रन्थों को इकट्ठा करके जलवा दें।'** यह भी प्रसिद्ध है कि दण्डी जी दीक्षित के ग्रन्थों पर शिष्यों के हाथों से जूते लगवाया करते थे।

क्या यह उचित था? - अष्टाध्यायी या कौमुदी के सम्बन्ध में स्वतन्त्र सम्मति रखना दण्डी जी के लिए सर्वथा उचित था। यह उनका अधिकार था। ग्रन्थों की उपयोगिता तथा अनुपयोगिता के विषय में स्वतन्त्र सम्मति रखने का विद्वानों को पूरा अधिकार है। हम यह भी नहीं कह सकते कि उनकी सम्मति निर्मूल थी। अष्टाध्यायी की पद्धति का निर्माण पाणिनि मुनि ने किया है। सूत्रों का क्रम अष्टाध्यायी का जीवन है। यदि क्रम की उपेक्षा कर दी जाए तो सूत्र व्यर्थ हैं। अनुवृत्ति असम्भव हो जाती है, **'विप्रतिषेधे परं कार्यम्'** बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है और **'पूर्वत्राऽसिद्धम्'** का कुछ बल ही नहीं रहता। अष्टाध्यायी के सूत्रों का इतना लघुकाय होना क्रम पर ही आश्रित है। उसका सौन्दर्य, उसका गौरव बहुत कुछ क्रम पर अवलम्बित है। क्रम को छोडकर यदि सूत्रों को कार्य में लाया जाए तो अनुवृत्ति के लिए स्मृति पर बोझ डालना पडता है, **'परं कार्यं'** और **'असिद्धि'** का तो अनुमान-मात्र ही लगाया जा सकता है। यह कहा जा सकता है कि जो आदमी संस्कृत व्याकरण का विद्वान् बनाना चाहे, वह यदि 'सिद्धातकौमुदी' को साद्यन्त पढ जाए तो भी सूत्रक्रम से परिचित हुए बिना वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकेगा। अष्टाध्यायी और उसके सूत्रों के क्रम का अटूट सम्बन्ध है।

मुनि विरजानन्द ने देखा कि लोग 'सिद्धान्तकौमुदी' को पढकर सूत्रक्रम की उपेक्षा करते हैं। भट्टोजी दीक्षित के देखने में सरल परन्तु वस्तुतः दुर्गम ग्रन्थ ने ऋषि-कृत व्याकरण का लोप कर दिया है। उनकी अन्तरात्मा इससे खिन्न होकर प्रचलित पद्धति के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए खडी हो गई।

अस्तु, ऐसे दण्डी विरजानन्द जी थे, जिनके द्वार पर कार्तिक सुदि २ संवत् १९१७(१४ नवम्बर १८६०) के दिन स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जाकर आवाज दी। परिचय हो जाने पर दण्डी जी ने पूछा कि, 'क्या कुछ व्याकरण पढा है?' दयानन्द ने उत्तर दिया कि 'सारस्वत पढा हूं।' इस पर आज्ञा हुई कि 'पहले सब अनार्ष ग्रन्थ यमुना में बहा आओ, तब आर्ष ग्रन्थ पढने के अधिकारी हो सकोगे।' दयानन्द ने आज्ञा का पालन किया और योग्य गुरु के चरणों में बैठकर विद्यामृत पान का यत्न आरम्भ किया।

स्वामी जी का विद्यार्थी-जीवन अनुकरणीय था। प्रातःकाल उठकर नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर पहले गुरु के लिए नदी से जल लाते थे, फिर अपने सन्ध्योपासना के पीछे पढने में लग जाते थे। प्रातः काल कुछ चने चबा लेते थे, जो उन्हें दुर्गा खत्री की कृपा से प्राप्त होते थे। मथुरा के बहुत से विद्यार्थियों के भोजन का प्रबन्ध बाबा अमरलाल जोशी की ओर से था, स्वामी जी के भोजन का प्रबन्ध भी वहीं पर था। रात्रि में भी सोने से पहले वह कुछ न कुछ अभ्यास किया करते थे, जिसके लिए तेल का मासिक खर्च चार आने लाला गोवर्धन सर्राफ से प्राप्त होता था। इसी प्रकार उदार महानुभावों की सहायता से आवश्यकताएं पूरी हो जाती थीं और शिष्य को गुरु-सेवा करते हुए विद्याध्ययन करने का खुला अवसर मिलता था। दण्डी जी का स्वभाव उग्र था। कभी-कभी नाराज हो जाते थे। शिष्यों के हाथ पर लाठी भी जमा देते थे। एक बार स्वामी जी की भी बारी आ गई। कहते हैं कि लाठी की उस चोट का निशान स्वामी जी के हाथ पर मरण-पर्यन्त बना रहा जिससे देखकर वह गुरु के उपकारों का स्मरण किया करते थे। एक बार छोटे से अपराध पर ड्योढी बन्द कर दी गई। तब योग्य शिष्य ने दो हितैषियों से सिफारिश कराई। सिफारिश से सन्तुष्ट होकर गुरु ने शिष्य को क्षमा किया।

स्वामी दयानन्द का जीवन पूरे यति का जीवन था। जिस दिन से वह जिज्ञासु बनें, उस दिन से मन, वाणी और कर्म से ब्रह्मचारी रहने का कठोर व्रत धारण किया। एक दिन की घटना है कि आप नदी के तट पर सन्ध्या कर रहे

थे। ध्यान खुला तो क्या देखते हैं कि एक युवती चरणों का स्पर्श कर रही है। चरणस्पर्श भक्ति से था, परन्तु पूर्ण ब्रह्मचारी ने उतने स्त्री-स्पर्श को भी पाप समझा और कई दिनों तक एकान्त में जाकर निराहार व्रत रख हृदय को शुद्ध किया। दण्डी जी से स्वामी ने अष्टाध्यायी, महाभारत आदि व्याकरण ग्रन्थों के अतिरिक्त अन्य आर्ष ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। इससे यह न समझना चाहिए कि अपने गुरु से केवल ग्रन्थों की विद्या ही प्राप्त की, उस ग्रन्थविद्या से कहीं बढकर वे भाव थे, जो उन्हें गुरु से प्राप्त हुए। आधुनिक या अर्वाचीन ग्रन्थों को छोडकर प्राचीन आर्ष ग्रन्थों में श्रद्धा, मूर्तिपूजा आदि कुरीतियों से वैराग्य और कठोर संयम-इन सबके लिए योगी दयानन्द गुरु का आभारी था।

विद्याध्ययन समाप्त हुआ। रीति अनुसार शिष्य कुछ लौंगों की भेंट लेकर गुरु के चरणों में उपस्थित हुआ और निवेदन करने लगा कि 'महाराज! मेरे पास और कुछ नहीं है, जो भेंट करुं, इस कारण केवल आध सेर लौंग लेकर उपस्थित हुआ हूं।' गुरु ने कहा - ''मैं तुझ से ऐसी चीज मागूंगा जो तेरे पास उपस्थित है!'' दयानन्द के बद्धांजलि होने पर गुरु ने आदेश किया -

'देश का उपकार करो! सत् शास्त्रों का उद्धार करो! मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटाओ और वैदिक धर्म फैलाओ!' दयानन्द ने आदेश को अंगीकार किया। अन्त में आशीर्वाद देते हुए दण्डी जी ने और भी कहा - **''मनुष्य-कृत ग्रन्थों में परमेश्वर और ऋषियों की निन्दा है और ऋषिकृत ग्रन्थों में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोडना!''**

इस अमूल्य उपदेश को शिरोधार्य करके श्री दयानन्द संन्यासी गुरु के द्वार से विदा हुए। जो वस्तु पर्वत की चोटी पर, वन की गहराई में, नदियों के प्रवाह में और महन्तों के डेरें में ढूंढी, पर नहीं मिली, वह अमृत के प्यासे दयानन्द को मथुरापुरी में दण्डी विरजानन्द के चरणों में मिली। वह वस्तु विद्या और विवेक-बुद्धि थी। उस वस्तु को पाकर, ब्रह्मचर्य के तेज से तेजस्वी ब्रह्मचारी संसार क्षेत्र में प्रवेश करता है।

***

प्रो.होलीकरजी का धन्यवाद!

सभा के अन्तरंग सदस्य एवं लेखक विद्वान् प्रो.ओमप्रकाशजी विद्यालंकार होलीकरजी ने अपने माता-पिता की पावन स्मृति में वैदिक गर्जना मासिक के लिए एक वर्ष हेतु रंगीन मुखपृष्ठ प्रदान किया है।

इससे पूर्व भी उन्होंने ऐसेही रंगीन मुखपृष्ठ प्रदान किया था। अतएव प्रान्तीय सभा प्रो.होलीकरजी का हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करती है! - सभामन्त्री

हमारी महाराष्ट्र की वेद प्रचार यात्रा

– आचार्य चन्द्रपाल

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी श्रुतिश्रवण पर्व (श्रावणी उपाकर्म) बडे ही हर्षोल्लास से सम्पन्न किया गया। मैंने इस पर्व पर अनुभव किया कि व्यक्तियों में आज भी सुनने की जिज्ञासा है तथा विद्वानों का सत्कार करने की लालसा भी है। सबसे प्रथम मेरा कार्यक्रम उमरगा (जि.उस्मानाबाद) में रहा। सभी पदाधिकारियों ने परिस्थिति के अनुकूल हमारी व्यवस्था की तथा सम्मान दिया। वहाँ का सेवक तो जब मैं वहाँ से निकला, तो अश्रुधारा बहाने लगा। जहाँ तक निलंगा का प्रश्न है, एक छोटी सी बात को छोडकर हर प्रकार से वहाँ के पदाधिकारियों ने बहुत ही सम्मान दिया। चाहे वे शाहिर बन्धु हो, या विजयकुमार कानडेजी हो, या ओमप्रकाश वाघमारेजी हो! तथा विजय कुमार कानडे की पत्नी का तो कोई जवाब ही नहीं है। उस बहन को तो मैं नतमस्तक होता हूँ।

एक वहाँ की घटना तो मेरे हृदय को स्पर्श कर गयी। जब एक व्यक्ति अन्धा दूसरे का सहारा लेकर मेरे प्रवचन के बाद मेरे कमरे में पहुंचा और पैर छुकर पचास रुपये देने लगा! मैंने उसमें पचार रुपये और मिलाकर जब उसे दिये। तब वह आँखो में आंसू भर लाया। वह रूपये लेने से मना करने लगा। बहुत देर बाद मैं उसकी जेब में रख पाया। सम्पूर्ण यात्रा पर सभी आर्य समाजों ने हमारा भरपूर सम्मान किया तथा जैसा नाश्ता-भोजन चाहा, वैसा ही मिला। सबके नामों का उल्लेख करना तो यहाँ सम्भव नहीं। फिर भी औराद(शा.) में अध्यापिका सुनीता, आदरणीय कच्छवासाहब, गुंजोटी में विश्वनाथजी, उदगीर में अर्जुनराव सोमवंशी, डा.सुजाताजी, पं.प्रकाशवीरजी, डा.नरेन्द्र शिंदे जी! कहने का अभिप्राय यह है कि सभी कुछ बहुत अच्छा रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के जितने भी पदाधिकारी है, वास्तव धर्मनिष्ठ होने के साथ कर्मनिष्ठ भी हैं। यही जीवन की सफलता का रहस्य है। विद्वान होना बडी बात नहीं है, बडी बात है धर्मात्मा एवं कर्मनिष्ठ बनना और उससे बडी बात है समाज को धर्मात्मा और कर्मनिष्ठ बनने के लिए प्रेरित करना!

ऋग्वेद में एक सूक्ति आती है – **'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।'** इस सूक्ति में दो भाग हैं। प्रथम **'मनुर्भव'** जिसका भाव है 'मनुष्य बनों'। मनुष्य कौन है – जो मानवता से सुशोभित है! मानवता से

कौन सुशोभित है – जो योगीराज श्रीकृष्ण के अनुसार अध्यात्म को आत्मसात कर लेता है! श्रीकृष्ण के अनुसार अध्यात्म है – **'अपने को जानना'**। जिसके लिए ऋषिवर दयानन्द ने २२ वर्ष की अवस्था से ४० वर्ष की अवस्था तक घोर तप किया। अपने को जानना क्या है– मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाना है, मेरे अपने प्रति क्या कर्तव्य है, परिवार के प्रति क्या कर्तव्य है, समाज व राष्ट्र के प्रति क्या कर्तव्य हैं? इनको जानना और अपने जीवन में आत्मसात करना ही अध्यात्म है, यही तो मनुष्य बनना है! परन्तु केवल 'मनुर्भव' होना दु:ख सागर में डूबना है और केवल **'जनया दैव्यं जनम्।'** (द्वितीय भाग) बनना महा दु:ख सागर में डूबना है। 'जनया दैव्यं जनम्' का अभिप्राय है दिव्य गुणों वाणी सन्तान पैदा करना, दिव्य गुणोंवाली प्रजा बनाना, दिव्य गुणोंवाले मनुष्य तैयार करना। कहने का अभिप्राय यह है कि सूक्ति के एक भाग को जीवन में आत्मसात करना भी घाटे का सौदा और दूसरे भाग को भी जीवन में अपनाना महाघाटे का सौदा है। जो व्यक्ति दोनों भागों को अपने जीवन का अंग बना लेते हैं, वे ही मृत्युरुपी सागर से पार होकर मोक्षरूपी आनन्द को प्राप्त करते हैं। अर्थात अपने लक्ष्य को प्राप्त करते है। व्यावहारिक पक्ष के आधार पर विचार कीजिए – यदि हम मनुष्य बन गये और अपनी सन्तान दुराचारी है, तो क्या हम दु:खरहित हो सकते हैं, अर्थात नहीं! मैं इस सूक्ति का प्रसंग लाकर यही सन्देश देना चाहता हूँ कि वहीं विद्वान, धर्मनिष्ठ, कर्मनिष्ठ है, जो स्वयं भी बनें और दूसरे को भी बनाये! जलता दीपक ही बुझे हुए दीपक को जला सकता है। अभिप्राय यह है कि हमारा प्रभाव मानव समाज पर तभी पडता है, जब हम कर्तव्यशीलता, नम्रता, इमानदारी, ईश्वरभक्ति, अहंकारशून्यता, सहनशीलता, हर स्थिति में समता एवं प्रसन्नता आदि गुणों से ओतप्रोत हों। विचार कीजिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन में कौन सा कष्ट नही सहा लेकिन शिकायत का एक भी शब्द उनके मुख से नहीं निकला। यहाँ पर उतने उदाहरण ऋषिवर के दिये जा सकते कि बहुत बडी नोटबुक भी कम पड सकती है।

मेरे एक महीने के कार्यक्रम में ८–१० दिन तीखा भोजन मिला तो मैंने थोडा सा लिया। एक दिन मुझसे पूछा भी आप भोजन में क्या लेंगे? मैंने कहा, 'कुछ भी बना लेना, मगर फीका बनवाना।' ऐसा ही हुआ...। मैंने कोई शिकायत नहीं की। ऐसा ही होना चाहिए।

समाज पर प्रभाव पडता है, जब हम चाणक्य की उस सूक्ति को अपने जीवन में अपनायेंगें जो इस प्रकार है – **'मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।'**

महाभारत में भी युधिष्ठिर ने यक्ष से एक प्रश्न के उत्तर में यह भी गहा था

पठका: पाठकाश्चैव
ये चान्ये शास्त्रचिन्तका:।
सर्वे व्यसनिनो ज्ञेया:
य: क्रियावान् स पण्डित:।।

अर्थात् पढनेवाले, पढानेवाले, उपदेश करनेवाले, सुननेवाले और जो शास्त्रों के विवेचक हैं मैं सब व्यसनी हैं। इनमें जो क्रियावान है, वही विद्वान है। कुलमिलाकर हमारी एक माह की महाराष्ट्र वेद प्रचार यात्रा काफी सफल रही। सभी आर्य समाजों के साथ ही प्रानीय आर्य प्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों का हृदय से आभार एवं साधुवाद!

(लेखक वैदिक प्रवक्ता, निवृत्त शिक्षाशास्त्री एवं मानव जागृति मिशनक के अध्यक्ष है।)

– डी–४३५, गोविन्दपुरम्,
गाजियाबाद (उ.प्र.)
मो.९९११५७६९२३

सभाद्वारा विद्वानों व आर्यसमाजों के प्रति

धन्यवाद विज्ञप्ति..!

हमारी विनती को सहर्ष स्वीकार कर आर्य जगत् के वैदिक विद्वान्, आर्य भजनोपदेशकों ने श्रावणी वेदप्रचार हेतु महाराष्ट्र के लिए अपना किमती समय दिया। रेलयात्रा, स्थान–गमनागमन, निवास, भोजन, दक्षिणा व अन्य व्यवस्था आदि विषयों पर सुविधा–असुविधाओं का विचार न करते हुए केवल मिशनरी भाव से 'वेदप्रचार' को ही एकमात्र उद्देश्य मानकर कार्य करते रहे। जहाँ–जहाँ की आर्यसमाजों में आपके कार्यक्रम हुए, वहाँ के पदाधिकारियों व कार्यकर्त्ताओं ने आप सभी का श्रद्धा के साथ आतिथ्य सत्कार किया। फिर भी कुछ कमियाँ रही होगी, तो इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी है। साथ ही महाराष्ट्र के भी मराठी विद्वानों ने घूम–घूमकर प्रचार किया। इसलिए आप सभी के धन्यवाद..!

इसी के साथ सभा के अनुरोध पर राज्य की लगभग १३० आर्य समाजों ने उन्हें दी गई तिथियों के अनुसार कार्यक्रम आयोजित किये और वैदिक पावन विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने के लिए अथक परिश्रम किये। इसलिए सभी आर्य समाजों का हार्दिक धन्यवाद! - **सभामन्त्री**

हिंदी दिवस विशेष

बनें विश्व की भाषा हिंदी

कवि-शम्भुनाथ तिवारी

बनें विश्व की भाषा हिंदी।
हम सब की अभिलाषा हिंदी।
भारत की गौरव-गरिमा का,
गान बने हिंदी भाषा,
अंतरराष्ट्रीय मान और,
सम्मान बनें हिंदी भाषा ।
स्वाभिमान-सद्भाव जगाती,
संस्कृति की परिभाषा हिंदी,
बनें विश्व की भाषा हिंदी,
हम सब की अभिलाषा हिंदी।
गांधीजी का सपना ही था,
ऐसा हिंदुस्तान बने,
जाति-धर्म से ऊपर हिंदी,
भारत की पहचान बने।
सर्वमान्य भाषा बनकर हो,
पूरित जन की आशा हिंदी।
बनें विश्व की भाषा हिंदी,
हम सब की अभिलाषा हिंदी।
दुनिया भर की भाषाओं का,
हिंदी में अनुवाद करें,
हम सब मिलकर विश्वमंच पर,
हिंदी में संवाद करें।
निजभाषा-साहित्य-सृजन का,
भाव जगाए भाषा हिंदी।
बनें विश्व की भाषा हिंदी,
हम सब की अभिलाषा हिंदी।
अन्य सभी चर्चित भाषाओं,
सा ही प्यार-दुलार मिले,
विश्वपटल पर हिंदी को भी,
न्यायोचित अधिकार मिले।
पूरे हों संकल्प सभी के,
जन-गण-मन-अभिलाषा हिंदी।
बनें विश्व की भाषा हिंदी,
हम सब की अभिलाषा हिंदी।
हिंदी का सारी भाषाओं,
से रिश्ता है, नाता है,
भारतवंशी कहीं रहे,
पर हिंदी में इठलाता है।
समता-स्नेह-समन्वय का,
संदेश बने जनभाषा हिंदी।
बनें विश्व की भाषा हिंदी,
हम सब की अभिलाषा हिंदी।
हिंदुस्तान बिना हिंदी के,
अर्थहीन है, रीता है,
देश हमारा हिंदी में,
सांसे ले-लेकर जीता है।
है स्वर्णिम भविष्य की सुंदर,
मोहक-मधुर दिलाशा हिंदी।
बनें विश्व की भाषा हिंदी,
हम सब की अभिलाषा हिंदी।

(दैनिक भास्कर के 'मधुरिमा' से साभार)

***

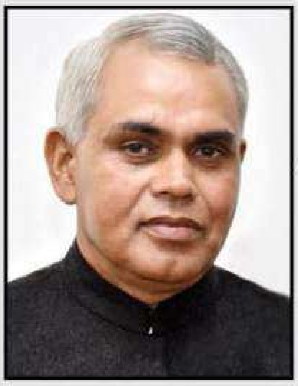

म.दयानन्द की जन्मभूमि गुजरात राज्य के महामहीम राज्यपाल नियुक्त होने पर

आर्य विद्वान् आचार्य श्री देवव्रतजी

का महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनायें...!

शास्त्रार्थ स्वर्णशताब्दी समारोह काशी में

आज से लगभग देढ सौ वर्ष पूर्व काशी में युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती का तत्कालिक सनातन धर्मी पण्डितों के साथ शास्त्रार्थ हुआ था, जिसे इतिहास में ''**काशी शास्त्रार्थ**'' के रूप में जाना जाता है। इस ऐतिहासिक घटना की पावन स्मृति आर्यों लिए प्रेरणा का विषय है। इसी उद्देश्य को लेकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के संयुक्त तत्त्वावधान में ''**काशी शास्त्रार्थ स्वर्ण शताब्दी–वैदिक धर्म महासम्मेलन**'' का भव्यता के साथ आयोजन दि.११, १२ एवं १३ अक्टूबर २०१९ को हो रहा है। वाराणसी के सुन्दरपुर मार्ग, नरिया, लंका स्थित चौधरी लॉन्स में आयोजित इस विशाल स्वर्ण शताब्दी समारोह में आर्य जगत् के उच्च कोटि के संन्यासी, विद्वान, आर्यनेता आदि पधार रहे हैं। अत: आर्यजन समारोह में पधारें।

१, २, ३ नवम्बर को अजमेर में ऋषिमेला

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में महर्षि दयानन्द का १३६ वां बलिदान समारोह आगामी १, २, ३ नवम्बर २०१९ को अजमेर के ऋषि उद्यान में बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हो रहा है। इस तीन दिवसीय ऋषिमेले में यजुर्वेद पारायण यज्ञ, वेदगोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता, विद्वान्-विदुषी, कार्यकर्त्ता सम्मान, तथा विविध विषयों के सम्मेलन आदि कार्यक्रम होंगें। आर्य जगत् के गणमान्य विद्वान, गुरुकुलों के आचार्य, संन्यासी, वानप्रस्थी, सार्वदेशिक तथा प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारी व कार्यकर्त्ता इस मेले में सम्मिलित हो रहे हैं। अत: इस समारोह में पधारने का अनुरोध सभा के पदाधिकारियों ने किया है।

पौन्धा (देहरादून) में होगा गुरुकुल महोत्सव

श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद के तत्त्वावधान में आगामी ८, ९, १० नवम्बर २०१९ को आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा(देहरादून) में **'गुरुकुल महोत्सव'** का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव में द्वितीय वैदिक गुरुकुलीय शास्त्रीय प्रतियोगिता, वेदांग शोधसंगोष्ठी, अभिनन्दन समारोह एवं सर्वगुरुकुलीय अधिवेशन आदि कार्यक्रम भी होंगें। राष्ट्रीय स्तर पर गुरुकुलों का संगठन हो तथा ब्रह्मचारियों व ब्रह्मचारिणियों के समुचित विकास को लेकर सभी आचार्यों व गुरुकुलीय स्नातकों में विचारविनिमय हो, यह इस महोत्सव के अ ायेजन का उद्देश्य है। अधिक जानकारी के लिए सहमन्त्री आचार्या डॉ.सुमेधाजी (मो.९७१९०१३७५६) एवं डॉ.धनंजयजी आचार्य (९४११११०६१०४) से सम्पर्क करें और इस समारोह में अधिक संख्या में भाग लेवे, ऐसा आवाहन श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद के अध्यक्ष श्री स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती ने किया है।

.... और चल बसे मन्त्री श्री वासवानीजी!

सामान्य व्यक्ति या कार्यकर्त्ता का संसार से चले जाना संस्था व समाज की दृष्टि से इतना हानिकर नहीं माना जाता, जितना कि किसी क्रियाशील, सिद्धान्तनिष्ठ एवं पैनी दृष्टि रखनेवाले जिम्मेदारी व्यक्ति का विदा होना! कुछ ऐसी ही अनुभूति हुई पिछले माह आर्य समाज, पिम्परी-पुणे के सक्रिय व उत्साही मन्त्री श्री जगदीशजी वासवानीजी के अस्मात् चले जाने से! यह शोकसमाचार सुनकर ऐसा लगा मानों किसी गतिमान गाडी का एक पहिया अचानक ही टूट गया हो! वासवानी का दि.१७ अगस्त २०१९ की प्रातवेला में ५.४५ बजे दुःखद निधन हुआ। वे ७४ वर्ष के थे।

इस आर्य समाज के पूर्वप्रधान स्व.श्री कृष्णचन्द्रजी आर्य एवं वर्तमान प्रधान श्री मुरलीधरजी सुन्दरानी के नेतृत्व में अन्य पदों के साथ ही मन्त्रीपद को सम्भालते हुए श्री वासवानी ने संस्था

का चहुमुखी विकास किया। कई वर्षों तक आप आर्य विद्यालय के सचिव पद पर भी रहें। साथ ही उबाडो धर्मशाला के सचिव पद का भार भी आपके ही कन्धों पर था। इन्द्रायणी को-ऑपरेटिव्ह बैंक के संस्थापक संचालक पद को आपने विभूषित किया। आर्य वैदिक सिद्धान्तों पर निष्ठा रखनेवाले श्री वासवानी की प्रसन्न मुद्रा एवं उत्साहभरा व्यवहार उनसे मिलनेवालों के हृदयासन पर विराजमान होता था। उनकी विनम्रता, मिलनसारिका, प्रसिद्धीपराङ्मुखता, संगठनकुशलता, दूरदर्शिता, मधुरवाग्मिता, स्वाध्यायशीलता आदि बातें सभी के लिए प्रेरणा विषय बनी रही। उनकी जागरुकता व सैद्धान्तिक दृढता ने यथासमय आर्य समाज को बचाये रखा। सबको साथ लेकर उन्होंने आर्य गतिविधियों को सफलतापूर्वक आगे बढाया। आर्य समाज के भवन का निर्माण हो, या वेदप्रचार के कार्यक्रम श्री वासवानी ने इन सभी का संचालन बडी सूझबूझ के साथ किया। दूसरों को आगे कर स्वयं परदें की पीछे रहना और कार्यक्रमों को यशस्वी बनाना, यह उनकी न्यारी विशेषता रही है।

सामाजिक जीवन के साथ ही श्री वासवानी का पारिवारिक जीवन भी सफल रहा है। उनकी जीवनयात्रा शून्यावस्था से आरम्भ होकर धन व ज्ञान की उँचाई तक पहुंचती है और वह भी निगर्विता व अहंकारशून्यता के साथ! उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मीरादेवी उन्हें प्रत्येक कार्य में उतने ही उत्साह के साथ सहयोग दिया। पुत्र संजय एवं कन्या रेखा कुमार अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए अनुव्रती बननें का प्रयास करते हैं।

ऐसे आर्य व्यक्तित्त्व का अकस्मात् संसार से विदा होना हम आर्यजनों के लिए भारी वेदना व शोक का विषय है। वैदिक आदर्शों की प्रतिमूर्ती व सादगीपूर्ण जीवन के धनी श्री वासवानीजी की रिक्तता सभी आर्यजनों को निरन्तर महसूस होती रहेगी। परमात्मा ऐसी सुयोग्य आर्य विभूति की पारलौकिक जीवनयात्रा सुखद, सफल व शान्तिप्रद करें, यही कामना!

शहीदों व क्रान्तिकारियों को नमन..!

मातृभूमि की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व समर्पित करनेवाले हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के अमर शहीदों एवं सभी ज्ञात-अज्ञात आर्य क्रान्तिकारियों को विनम्र भाव से शत्-शत् अभिवादन एवं भावपूर्ण श्रद्धान्जलि...!

।।ओ३म्।।

मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं ज

ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश

ज्ञानाचे फळ..!

य इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमन्तिकाम्।
ईशानं भूतभव्यस्य न ततो विगुजुप्सते, एतद् वै तत्।।

(कठोपनिषद्-४/५)

अर्थ- जो माणूस कर्मफल भोगणाऱ्या या जीवात्म्याला जाणतो आणि असे समजतो की, 'जगाच्या उत्पत्तीमुळे परमेश्वराला आणि प्रकृतीलापण कोणताही लाभ होऊ शकत नाही!' तसेच या जगात जीव हाच कर्मफळांना भोगणारा आहे. कर्मफळांचा दाता परमेश्वर हा जगाच्या आत विराजमान आहे. चैतन्यस्वरुपी असल्याने तो परमात्म्याच्या अत्यंत जवळ बंधू रूपाने असल्याने भूत व भविष्याचा स्वामी आहे.' असे जो मानतो, त्याला परमेश्वराचे ज्ञान प्राप्त होऊन कधीच पश्चाताप होत नाही. हेच तर या ज्ञानाचे फळ आहे.

दयानंद वाणी

ईश्वराची मूर्ती नाहीच नाही..!

ज्या अर्थी परमेश्वर निराकार, सर्वव्यापक आहे, त्याअर्थी त्याची मूर्ती बनूच शकत नाही आणि जर केवळ मूर्तीच्या दर्शनाने परमेश्वराचे स्मरण होत असेल तर परमेश्वराने निर्माण केलेले पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायू, वनस्पती वगैरे वस्तूंच्या अद्भुत रचना पाहून ईश्वराचे स्मरण होणार नाही काय? ज्या डोंगरापासून माणूस मूर्ती घडवतो ते डोंगर पृथ्वी याच परमेश्वराने बनविलेल्या महामूर्ती आहेत, त्या पाहून परमेश्वराचे स्मरण होऊ शकणार नाही काय?

(सत्यार्थप्रकाश-अकरावा समुल्लास)

हैदराबाद मुक्ती संग्रामात आर्य समाजाचे योगदान!

– रमेश ठाकूर

भारतीय स्वातंत्र्याचा इतिहास जसा गौरवमय व रोमांचकारी आहे, तितकाच हैद्राबाद मुक्ती संग्रामाचाही आहे. हैदराबाद हे भारतातील सर्वात मोठे संस्थान होते. इंग्रजांच्या 'फोडा व झोडा' या नीतीमुळे हिंदू व मुस्लिम स्थापण्याच हा एकमेव मार्ग समजला जाऊ लागला. तत्कालीन आसफजाही शासक मीर उस्मान अली बादशहाचे धोरण औरंगजेबाच्या मार्गाचे अनुसण करू लागले. ते स्वतंत्र इस्लामी शासक बनण्याचे स्वप्न पाहू लागले. शासकीय अत्याचार व धोरणाच्या दुष्परिणामामुळे पारस्परिक वैमनस्य व विरोध, शासनाच्या आश्रयाने अनेक प्रकारच्या बाधक व हानीकारक अराजक तत्वांचा उदय,

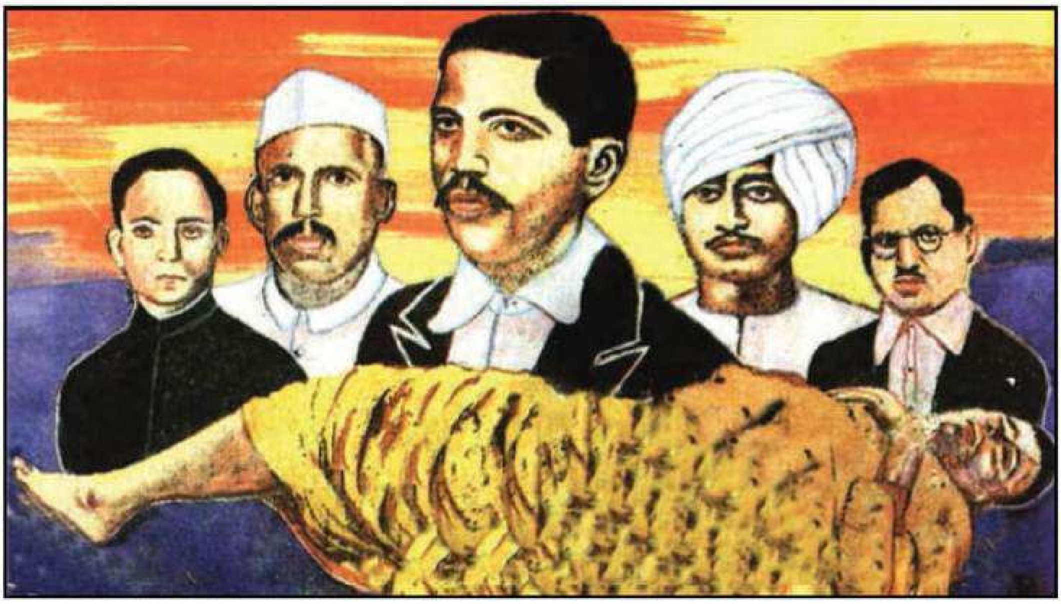

यांच्यातील दरी वाढत चालली होती. हैदराबाद संस्थानात ती अधिक उग्र बनली. शासकीय धोरणामुळे बहुसंख्य वर्ग उपेक्षित राहिला होता, तो पीडित व त्रस्तही झाला होता. इस्लाम राज्य प्रलोभन व पुरस्काराद्वारे समाजातील निम्न जाती-जमातीच्या लोकांचे धर्म परिवर्तन या सर्व स्तरीय संघर्षांना तोंड देत स्वतांत्र्य चळवळीस प्रारंभ झाला.

इ.स.१९११ मध्ये नवाब

उस्मानअली खाँ सिंहासनारूढ झाला. या बदलाचा परिणाम २७० वर्षाच्या औदार्यपूर्ण धोरणात कमालीचा बदल झाला. हिंदूंच्या धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक व राजकीय अधिकारांना पायबंद घालण्यात आला. याशिवाय याच काळात भारतात खिलाफत चळवळीस जोर चढला होता. यामुळे मुस्लिम समाज आक्रमक बनला होता. याच कालावधीत रजाकार पार्टीचा उदय झाला. या संघटनेचे काम आर्य-हिंदूंना मुस्लिम बनविणे, त्यांच्या स्त्रियांचे अपहारण करणे, त्यांच्यावर पाशवीय अत्याचार करणे हे होते. या संघटनेचे संबंध पंजाबच्या खाकसर चळवळीशी निगडीत होते. यांनी आर्य समाजाचा विरोध सुरु केला. यामुळे आर्य समाज अधिक प्राणवान, वर्चस्वी व तेजस्वी बनला. आर्य समाजाने हैदराबाद रियासती विरुद्ध (संस्थांना विरुद्ध) चळवळ उभी केली. सत्याग्रहाचा मार्ग अधिक गतिमान केला. हा एक रोमांचकारी इतिहास आहे. हा इतिहास आपल्या त्याग आणि बलिदानाने रचला, उभारला, घडवला. यात भाई बन्सीलाल व भाई श्यामलाल यांचा प्रमुख वाटा होता. हे बंधू अग्रस्थानी होतते. या उभयतांनी आपले सर्वस्व आर्य समाजासाठीच समर्पित केले होते. यांनी हैद्राबाद, विशेष करून मराठवाड्यात आर्य समाजाची नीव पक्की केली. त्यांचे कार्य आम्हा मराठवाडा वासियांसाठी स्वाभीमानाची व गौरवाची बाब आहे.

हैदराबादच्या नवाबाच्या विरोधात विद्रोहाची आणि संघर्षाची तुतारी फुंकून आर्य समाजाने भावी इतिहासाची जणू पायाभरणीच केली. पुढे १९४८ (भारतास १८४७ मध्ये स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर एक वर्षाने) मध्ये लोहपुरुष, त्यावेळचे भारताचे गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल यांनी साकार रूप दिले. त्यावेळी सरदार वल्लभभाई म्हणाले होते - 'हैदराबाद राज्यात आर्य समाज सक्रीय नसता तर हैदराबाद संस्थानाचे भारतात विलीनीकरण एवढ्या सोप्या रीतीने व सहजपणे शक्यच झाले नसते.'

हैदराबाद आणि त्या अंतर्गत असलेला मराठवाडा मुक्तीसंग्राम सुलभ झाले. ते आर्य समाजाने सत्याग्रहाची जी विशाल मोहीम होती घेतली व प्रत्येक खेड्यातून सत्याग्रहासाठी माणसे पाठविली गेली. त्यामुळे एकट्या माझ्या गुंजोटी सरख्या छोट्या खेड्यातून शंभराच्या जवळपास तरुण सत्याग्रहात सहभागी झाले होते. या सत्याग्रहात केवळ हैदराबाद संस्थानातील लोकच सहभागी झाले होते असे नाही तर उत्तरप्रदेश, पंजाब या भागातूनही हजारो सत्याग्रही सहभागी झाले. निझाम सरकार यामुळे

किंकर्तव्यमूढ झाले. संस्थानातल्या बंदीशाकाही कमी पडल्या. निझामास काय करावे हेच कळेनासे झाले. परिणामी निझामास आपले संस्थान भारतात विलीन करण्याशिवाय दुसरा पर्यायच उरला नाही.

भारतीय इतिहासकारांनी या सत्याग्रहाची खऱ्या अर्थाने नोंद घेतली नाही. स्वातंत्र्यवीर सावरकर, त्यांचे अनुययी सोलापूर निवासी स्व.वी.रा.पाटील (सोलापूर निवासी) यांनी सत्याग्रहाची पथके सोलापूरहून नियोजनबद्ध रीतीने पाठविण्याची व्यवस्था केली होती, यास म्हणावे तसे प्रकाशात आणले नाही, असेच म्हणावे लागेल. आर्य समाजाने हे जे केले ते निस्वार्थ भावनेने महात्मा नारायण स्वामी सारखी महान व्यक्ती उत्तरेतून इथे आली व सत्याग्रहास बळकटी दिली, प्रसिद्धी साठी नव्हे तर स्वातंत्र्यासाठी यात समर्पणाची भावना होती. राष्ट्रासाठी जागरुक, दक्ष व सक्रीय राष्ट्ररक्षक म्हणून, आपला धर्म समजून हे केले. त्यांचा उद्देश केवळ स्वातंत्र्य प्राप्तीचा होता.

हा लढा म्हणजे केवळ मराठवाडा मुक्तीचा लढा नव्हे, तर हैदराबाद संस्थानाच्या मुक्तीचा लढा होता. यात आर्य समाजाचा सिंहाचा वाटा होता. याची दोन कारणे होती -

१. आर्य समाजाने विश्वस्तरीय संघटन, 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली' येथे आहे. या सभेअंतर्गत १८७५ पासून सातत्याने स्वातंत्र्याचे स्फुल्लींग तेवत ठेवण्याचे काम आर्य समाजाने केले. यात स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा नारायण स्वामी, सरदार भगतसिंग, रामप्रसाद बिस्मिल, राजे सयाजीराव गायकवाड, छत्रपती शाहू महाराज, स्वामी रामानंद तीर्थ, भाई श्यामलाल, भाई बन्सीलाल, न्या.केशवराव कोरटकर, पं.नरेन्द्रजी, पं.रामचंद्रजी देहलवीं, पं.विनायकराव विद्यालंकार, श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त, स्वामी स्वतंत्रानंदजी, रतनलाल अवस्थी, पं.वीरभद्र आर्य, पं.कर्मवीरजी शंकरराव टोंपे, वीरभद्रे अंबेसंगे, मल्लप्पा सरसंबे, पं.प्रल्हादजी स्नेही, म.आनंद स्वामीजी, डी.आर.दास, पं.मंगलदेवजी शास्त्री, प्रभृती... किती जणांची नावे सांगावीत? या सर्वांना स्वातंत्र्याचा गुरुमंत्र आर्य समाजाचे संस्थापक महर्षि स्वामी दयानंदांकडून मिळालेला होत. स्वामी दयानंद म्हणाले -

'परकीयांच्या सोनेरी महालापेक्षा आपली स्वत:ची झोपडी अधिक प्यारी समजावी व ती खरेच प्यारी असते.' लोकमान्य बालगंगाधर टिळकांच्याही आधी स्वमा दयानंदांनी स्वदेशाची प्रेरणा दिली होती. याचा परिणाम म्हणेच हैद्राबाद संस्थान स्वतंत्र करण्यासाठी

सत्याग्रहाचा उभारलेला अहंसक लढा. स्वातंत्र्याची ही मशाल भारतभार पसरवण्याचे काम खऱ्या अर्थाने स्वामी दयानंदांनी आर्य समाजाच्या रूपाने केले. भारतीयात स्वाभीमान, मानवता, देशप्रेम, साधी राहणी व उच्च विचारसरणी ही भावना रुजविण्यासाठी युगद्रष्टा स्वामी दयानंदांचा संदेश खेडोपाडी व घराघरांपर्यंत पोहोंचवण्याचे काम आर्य समाजाने केले.

संबंध भारतात आर्य समाज सक्रीय झाला. हैदराबाद राज्यातही याचे पदार्पण होणे ही काळची गरजच होती. अजमेरचे श्री.भगवानस्वरूपजी यांचा आर्यसमाजाची स्थापना झाली. हे पहिले आर्यसमाज इ.स.१८९२ मध्ये प्रज्ञाचक्षू श्री गीरानंद स्वामींच्या प्रभावामुळे हैदराबाद येथील सुलतानबजारमधये आर्य समाजाची स्थापना झाली. श्री कामता प्रसाद प्रधान व महात्मा लक्ष्मणदास मंत्री निवडले गेले. दुसऱ्याच वर्षी म्हणजे इ.स.१८९३ मध्ये आर्य समाजाचा वार्षिकोत्सव कंदास्वामी बागेत झाला. हा क्रम पुढे चालूच राहिला. अनेक विद्वानांची भाषणे लोकांना ऐकण्याचे संधी मिळाली. जनता आर्य समाजाकउे आकर्षित झाली. त्यावेळी आर्य समाजाच्या उत्सवाच्या अध्यक्षस्थानी नवाब जाफरजंग, नवाब इमादुल्मुल्क, अघोरनाथ चट्टोपाध्याय यासारख्या प्रतिष्ठित मंडळींनी केले.

भारताचे स्वातंत्र्य प्राप्तीनंतरचे गृहमंत्री लोहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल यांनी आर्य समाजाचे स्वातंत्र्य चळवळीच्या लढ्यातील कामाचे नेहमीच कौतुक केले आहे. ते म्हणायचे, 'आर्य समाजाने पृष्ठभूमी बनवली नसती तर तीन दिवसात हैदराबाद रियासत पोलिस ॲक्शनद्वारे स्वतंत्र होऊ शकले नसते.' एवढेच नाही तर त्यांनी भाई बन्सीलाल यांना दिल्लीस बोलावून घेतले होते व हैदराबाद रियासतच्या परिस्थितीबाबत सल्लामसलतही केली होती. हे देखील आर्य समाजाच्या कार्याची व भाई बन्सीलालजी यांच्या सक्षम नेतृत्वाची जाणीव करून देण्यास पुरेसे आहे. आर्य समाज राष्ट्रीय स्वातंत्र्य तसेच अस्पृश्यता, जाती-निर्मूलन, बालविवाह बंदी, विधवा विवाह, हिंदी प्रसार, हुंडा बंदी, खादी वस्त्र वापर इत्यादी सुधारणांसाठी अग्रेसर राहिला आहे.हैदराबाद मुक्ती संग्राम फार मोठा लढा आहे. या लढ्याचे केंद्र व नेतृत्व आर्य समाजच राहिले आहे, हे इतिहासाला कधीही विसरता येणार नाही.

(लेखक आर्य समाज गारखेडा औरंगाबाद चे प्रधान व म.गांधी मिशनचे शिक्षण समन्वयक आहेत.)

मो.९४२३१७८८०३

असा झाला श्रावणी वेद प्रचार

– नारायण कुलकर्णी

संपूर्ण जगात जेथे आर्यसमाज आहेत, तेथे दरवर्षी श्रावणी पर्व वेद प्रचाराने साजरा करतात.प्रत्येक आर्य समाज विद्वानांच्या भजनिकांच्या तारखा निश्चित करून काही ठराविक दिवस उत्सव करून मंगलकारी बनवतात.

मागील सुमारे २५ वर्षापासून महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे सर्व अंतर्गत आर्य समाजात आर्य विद्वान, भजनिक दिवस ठरवून पाठविले जातात. निमंत्रण आर्य प्रतिनिधी सभेचे असते. उदा. यंदा १ ऑगस्ट ते ३० ऑगस्ट दरम्यान महाराष्ट्राच्या विविध भागात श्रावणी वेदप्रचार साजरा झाला. यात उत्तर भारतातून आलेल्या विद्वानांनी कमी प्रवासात दिलेल्या सर्व आर्य समाजात उद्बोधन केले. हे कार्यक्रम तीन-चार महिन्यापूर्वीच ठरतात. विद्वानांना पूर्वीच गाडीच्या तिकीटांचे रिझर्वेशन करता येते. समाजाला आलेल्या विद्वानांकडून लाभ घेण्यासाठी व पूर्व तयारीसाठी अवधी मिळतो. अशा प्रकारे नियोजन केवळ महाराष्ट्र पुरते मर्यादित आहे. या मागे श्रद्धेय ब्रह्ममुनिजींची दूरदृष्टी, त्याग, तपस्या आहे. त्यांच्या या धाडसी प्रयासाने एक वेगळा पायंडा चालू झाला. वयोमानाने ते आज थकत आहेत. तरी त्यांच्यात दुर्दम्य इच्छाशक्ती कार्यरत आहे. त्यांना साथ देण्यासाठी त्यांच्या सारखेच त्यागी अनुयायी त्यांनी निर्माण केले. प्रा.डॉ.नयनकुमारजी आचार्य, श्री राजेंद्र दिवे, श्री अर्जुनराव सोमवंशी, श्री लक्ष्मणराव आर्य, श्री तिवार इत्यादी अनेक कार्यकर्ते सेवा देत आहेत. ही महाराष्ट्रातील सर्व आर्य समाजासाठी अभिमानाची गोष्ट आहे.

वेद प्रचाराच्या कामात अनेक महात्मे तन-मन धनाने सहयोग करतात. मी लेखनीच्या माध्यमातून वेद प्रचार करतो. पण लेखनी पेक्षा वाणी जास्त प्रभावशाली असते, असा माझा अनुभव आहे. कारण त्यात लगेच प्रतिसाद मिळतो. मागील १०-१२ वर्षांपासून सभा मला ग्रामीण भागात प्रचाराला पाठविते. यावर्षी तब्बल १६ दिवस मला काम मिळाले. अर्थात २ महिन्यापूर्वीच मला तशी सूचना मिळाली. प्राणायाम, सूक्ष्म व्यायाम, योग्य आहार घेऊन मी स्वत:ला तंदुरुस्त ठेवत असतो. यावर्षी ९ ते २४ ऑगस्ट या काळात मला हिंगोली व हदगांव (जि.नांदेड) या भागातील बऱ्याच गावात वेदप्रचार करण्याचे भाग्य लाभले.

दि.०९ ऑगस्टला मी घोडा ता.कळमनुरी जि.हिंगोली येथे श्री नारायणराव देशमुख यांचे घरी पोहोचलो. तेथे दुपारनंतर त्यांच्या घरी हवन, वेद-प्रवचन केले. श्री प्रतापसिंह चौहान हे सभेचे भजनोपदेशक माझ्या सोबत होते. त्यांचा पहाडी आवाज अख्ख्या महाराष्ट्राला माहीत आहे. त्यांची सोबत असल्याने तेथून पुढचा प्रवास सुखकर गेला. रात्री श्री उमाकांत देशमुख यांच्या बैठकीत निवास केला. दुसऱ्या दिवशी जरोडा येथे आम्हाला नियोजनाप्रमाणे जायचे होते, पण जरोडा गुरुकुलाची जमीन कसणाऱ्या कास्तकाराच्या घरी हवन करून येळेगांव ता.कळमनुरी जि.हिंगोली येथे स्वातंत्र्य सैनिक पू.देव मुनी (श्री काळे पाटील) यांच्याकडे थांबलो. दि.११ रोजी त्यांच्या घरी हवन व त्यांच्या नातवाचा उपनयन संस्कार केला. परिसरातील १५-२० लोक उपस्थित होते. पुढील दिवशी गोशाळा मरडगा ता.कळमनुरी जि.हिंगोली येथे हवन करून पुढल्या दिवशी त्याच गावातील हवन, भजन, प्रवचन, अंधश्रद्धा या विषयावर प्रवचन झाले. ग्रामीण भागात महिलांमध्ये महिला प्रचारकाची नित्तांत गरज आहे. रात्री मुक्कामाला भाटेगाव ता.हदगांव जि.नांदेड येथे श्री शिवाजी दत्तराव शिंदे यांचे घरी निवास केला. हा परिवार पूर्णपणे आर्यसमाजी विचारांचा आहे. रात्री मारुती मंदिरात वेदावर प्रवचन झाले. भाटेगाव येथील लोकांनी महत्प्रयासाने आर्यसमाजासाठी जागा हस्तगत करून त्यावर पत्र्याचे शेड उभे केले आहे. तेथे दोन दिवस हवन, प्रवचन, भजन झाले. दुपारी तेथील जि.प.प्रा.शाळेत भजन व 'हैद्राबाद मुक्ती संग्रामाचा इतिहास' सांगितला. 'हे तर आम्हाला माहीतच नव्हते', अशी तेथील शिक्षकांची प्रतिक्रिया होती. गावाजवळ २ कि.मी. अंतरावर एक टेकडी आहे. तेथे महादेवाचे मंदिर आहे. रिमझीम पाऊस सुरु होता. तरी पण आम्ही तेथे गेलो. सोबत स्थानिक कार्यकर्ते श्री जनार्दन शिंदे (स्वामी) होते. तेथील परिसर नयनरम्य आहे. बराच वेळ मी तेथे रमलो. दि.१५ ला रात्री मुक्काम येथे झाला. हे आर्यसमाज मंदिर तळणी सुंदर बांधले आहे. येथे निवास, हवन, प्रवचनाची उत्तम सोय आहे. श्री डॉ.तावडे व त्यांचे बंधू श्री मगर, श्री देवीदास महाराज तळणीकर, श्री देशमुख, श्री खामकर असे अनेक लोक क्रियाशील कार्यकर्ते आहेत. तिथे भजन, प्रवचनासोबत प्रश्नोत्तर, शंका समाधान चर्चा रंगल्या.

दि.१७ ऑगस्टला आम्ही शिऊर येथे प्रदीपराव देशमुख यांचे घरी निवास केला. भोजनानंतर रात्री मारुती मंदिरात

भजन झाले व 'विराट पर्व, महाभारता'वर प्रवचन पार पडले. येथे श्री संतोष देशमुख यांची भेट झाली. ते गुरुकुलाचे स्नातक आहेत. त्यांची दोन्ही मुले गुरुकुलात शिकतात. ते आर्यसमाजासाठी, गुरुकुल कान्हा बुट्टीबोरी, नागपूर साठी समर्पित जीवन जगत आहेत. दुसऱ्या दिवशी श्री प्रदीपराव देशमुख यांच्या घरासमोर मोठा शामीयाना टाकला होता. आसपासच्या परिसरातील ८ ते १० गावातील प्रतिष्ठित व्यक्ती निमंत्रित होत्या. वेदप्रचार हा मुख्य उद्देश असला तरी महर्षी दयानंद आर्ष गुरुकुल कान्हा-नागपूरचे संचालक श्री तासके साहेब (आर.टी.ओ.) यांचा सत्कार कार्यक्रम, श्री राजेश्वरराव देशमुख(शासकीय कॉन्ट्रॅक्टर) व त्यांचे बंधू श्री प्रदीपराव देशमुख यांनी आयोजित केला होता. श्री प्रदीपराव देशमुख यांचे व्यक्तिमत्त्व उदार आहे. ते आर्य समाजाचे कर्मठ कार्यकर्ते आहेत. ते कान्हा आर्ष गुरुकुल नागपूर, सर्वोदय चळवळ व भाजपा चे सक्रीय कार्यकर्ते आहेत. काही किरकोळ अपघातामुळे गुरुकुलचे आचार्य श्रद्धेय धर्मवीरजी येऊ शकले नाहीत. याची खंत सर्वांना होती. तरी त्यांनी दोन ब्रह्मचारी पाठविले होते.

सत्कार सोहळा हृदयस्पर्शी अनौपचारिक होता. तेथे प्रथम हवन झाले. यज्ञाचे ब्रह्मा हदगांव आर्य समाजाचे प्रधान श्री शेषराव शिंदे हे होते. नंतर भजन झाले. श्री राजेश्वरराव देशमुख शिऊरकर यांनी श्री तास्के साहेब(आरटीओ) यांचा शाल, श्रीफळ, पुष्पहार व मानपत्र अर्पण करून सन्मान केला. या कार्यक्रमाला प्रमुख पाहुणे वक्ते परळी येथून डॉ.नयनकुमार आचार्य यांना पाचारण केले होते. त्यांनी आपल्या भाषणातून श्री तासके साहेबांच्या निस्पृह, निगर्वी व प्रसिद्धी पराङ्मुख वृत्तीचा गौरव करून वैदिक तत्त्वज्ञानाच्या आवश्यकतेवर भर दिला. सोबतच श्री देशमुख बंधू ही समाज कार्यात देत असलेल्या योगदानाबद्दल त्यांचेही कौतुक केले. याच कार्यक्रमात हादगाव परिसरातील आर्य कीर्तनकार श्री तळणीकर महाराज यांनीही उपस्थितांना मार्गदर्शन केले. एका घरगुती कार्यक्रमाचा लाभ झाल्याचे दृष्य सर्वांनी अनुभवले. शिऊर गांव पैनगंगेच्या तीरावर अगदी छोटे अंदाजे शंभर घराचे गाव आहे.

शिऊरच्या कार्यक्रमानंतर आम्ही रात्री मुक्कामाला कंजारा जि.हदगांव येथे श्री तंवर यांचेकडे गेलो. दि.१९ ला सकाळी ७-८ लोकांच्या उपस्थितीत हवन, भजन, प्रवचन झाले. दुपारी शाळेत विद्यार्थ्यांसमोर 'हैद्राबाद मुक्ती संग्रामा'च्या कथा सांगून आम्ही रात्री

मुक्कामाला तामसा येथे श्री बंडेवार यांच्या घरी गेलो. दुसऱ्या दिवशी श्री रविसेठ बंडेवार यांचे घरी हवन, भजन, प्रवचन पार पडले. नंतर विद्यासागर मुलींचे हायस्कूल येथे दुपारी ३ ते ४ भजन व हैद्राबाद मुक्ती संग्रामावर व्याख्यान दिले. यास प्रतिसाद उत्तम होता. पुढील दिवशी श्री बंडेवार यांचे मोठे बंधूकडे हवन केले. रात्री निवघा(बाजार) येथे मुक्कामाला श्री धोंडीराम आर्य (शिंदे) यांचेकडे निघालो. तेथे दि.२२ ते २४ ऑगस्ट दरम्यान आर्य समाजाच्या भव्य वास्तूत भजन, वेद प्रवचन पार पडले. येथील प्रवचनाचे विषय होते वेद, महर्षी दयानंद यांचे जीवन चरित्र व कार्य, अंधश्रद्धा निर्मूलन, व्यसन मुक्ती, गोमाता आर्यसमाजाचा प्रचार इत्यादी होते. येथील कार्यक्रमास ४०-५० स्त्री-पुरुष गावातील प्रतिष्ठित व्यक्ती, व्यापारी, शेतकरी, युवक उपस्थित होते. शेवटच्या दिवशी भंडाऱ्याचा कार्यक्रम होता. येथे गंगाराम पाटील हायस्कूलमध्येही आमचा कार्यक्रम झाला.

निवघा (बाजार) या गावात गुरुकुलचे ५-६ स्नातक आहेत. श्री शामसुंदर कदम हे युवक आर्यसमाजाचे प्रधान आहेत. त्यांचे शिक्षण गुरुकुल येडशी जि.धाराशिव (उस्मानाबाद) येथे १२वी पर्यंत झाले आहे. ७५ वर्षे वयाचे कार्यक्षम मंत्री श्री धोंडीराम आर्य (शिंदे)यांचा तरुणांना लाजवेल असा उत्साह आहे. यांची २ मुले गुरुकुल होशंगाबाद चे सुयोग्य स्नातक व प्राध्यापक आहेत. मोठे चिरंजीव प्रा.डॉ.नरेंद्र यांच्या पत्नी सौ.मधुमती या आर्य समाजाचे प्रसिद्ध दिवंगत विद्वान श्रद्धेय आचार्य शिवमुनिजी(औराद) यांच्या कन्या आहेत. लहान मुलगा दीपक वडिलांसोबत राहून सॉ मीलच्या व्यवसायात मदत करतो. श्री धोंडीराम आर्य यांचे शिक्षण जास्त झाले नाही. लहान असतांना अत्यंत हलाखीच्या परिस्थितीत दिवस काढले. परमेश्वराच्या कृपेने ते आर्य समाजाच्या संपर्कात आले व त्यांच्या जीवनाचे कल्याण झाले.

अशा प्रकारे आमचा वैदिक धर्म प्रचाराचा दौरा अतिशय उत्तमरितीने संपन्न झाला. जेथे जेथे आर्य समाज आहे, तेथे युवा वर्ग आकर्षित होत आहेत. प्रचार काळात ज्या आर्य सज्जन महानुभावांचा संपर्क आला व त्यांनी आमची पुरेपूर व्यवस्था केली. प्रेम व स्नेहाने आमच्याशी नाते जोडले. त्याबद्दल आम्ही त्यांचे मन:पुर्वक ऋणी आहोत.

- 'आर्यकुटी', कौठा परिसर,
लातूर रोड, नांदेड.
मो.८८८८३३११०४,८९९९६६०२०९

* * *

(शोकवार्ता)

कर्ममुनिजींना पुत्रशोक

परळी येथील आर्य समाजाचे कर्मचारी व वयोवृद्ध वानप्रस्थी श्री कर्ममुनिजी यांचे द्वितीय सुपुत्र श्री साहेब सोपानराव मस्के यांचे दि.९ सप्टेंबर रोजी रात्री अल्पशा आजाराने आकस्मिक निधन झाले. मृत्युसमयी ते ४५ वर्षे वयाचे होते. दुर्दैवाने मागील १५ दिवसांपूर्वीच त्यांच्या पत्नीचे विषमज्वराने अकाली निधन झाले होते. अशा एकामागून एक दुर्दैवी घटनांमुळे कर्ममुनिजी व मस्के कुटुंबावर दु:खाचा डोंगर कोसळला आहे. त्यांच्या मागे दोन मुले व एक मुलगी, वडील, दोन भाऊ, बहिणी असा परिवार आहे.

स्व.श्री साहेब मस्के हे परळीच्या श्री सरस्वती विद्यालयात चतुर्थश्रेणी कर्मचारी म्हणून कार्यरत होते. विद्यार्थी जीवनात व्यायाम व मल्लखांब खेळात अग्रभागी असलेल्या श्री मस्के यांना राष्ट्रपती पुरस्कार ही मिळाला होता. क्रीडाशिक्षक श्री सुभाष नानेकर व म.दयानंद व्यायामशाळेचे प्रमुख श्री देविदासराव कावरे यांच्या मार्गदर्शनामुळे आर्यवीर दलाच्या राष्ट्रीय शिबिरात सहभागी झाले होते.

प्रल्हादराव मानकोसकर यांचे निधन

निटूर (ता.निलंगा जि.लातूर) येथील आर्य समाजाचे प्रतिष्ठित कार्यकर्ते, निवृत्त शिक्षक व परिसरातील पहिले वृत्तपत्रविक्रेते श्री प्रल्हादराव त्र्यंबकराव मानकोसकर यांचे वयाच्या ८७ व्या वर्षी दि.१८ ऑगस्ट रोजी दुपारी २.४५ वा. अल्पशा आजाराने दु:खद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी सुमनबाई, ३ मुले सर्वश्री शिवकुमार, ओमप्रकाश, वामनराव, एक मुलगी आणि सुना व नातू-नाती असा परिवार आहे.

श्री मानकोसकर यांना ४० वर्षांपूर्वी आर्य समाजाचे सान्निध्य लाभले. तेंव्हापासून आजतागायत वाचन, सत्संग, सभा-संमेलनात सहभाग, कीर्तन-प्रवचन या माध्यमातून ते आर्यमय होत गेले. वैदिक विचारांवर त्यांची दृढ श्रद्धा होती. चर्चा व बैठकांतून सामान्य लोकांना आर्य समाजाचे सिद्धांत पटवून देण्याचा ते प्रयत्न करीत असत. तत्त्वनिष्ठ शिक्षक म्हणून त्यांनी विद्यार्थी घडविण्याचेही कार्य केले. निटूर परिसरात ग्रामीण वाचकांना

त्यांनी वृत्तपत्रे उपलब्ध करून दिली. ते पहिले वृत्तपत्रविक्रेते (एजन्सीज) व पत्रकार ही होते. गावातील ग्रामपंचायतीचे सदस्य म्हणून त्यांनी मोलाची भूमिका बजावली. सामान्यांना मोलाचा सल्ला देणारे एक प्रतिष्ठित नागरिक म्हणूनही त्यांची सर्वत्र ओळख होती. गेल्या ५-६ वर्षांपासून मधुमेहाच्या आजाराने त्यांना ग्रासले. अशातही त्यांनी स्वत:ला सावरले. मात्र अलीकडे महिन्यापासून त्यांना हिवताप चढला व पायालाही इजा झाली होती. शेवटी उपचारांती त्यांची प्राणज्योत मालवली.

त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी पं.ज्ञानकुमार आर्य, सभेचे मंत्री राजेंद्र दिवे व इतरांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार पार पाडले. यावेळी मोठा जनसमुदाय उपस्थित होता.

वरील दोन्ही दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र सभा व आर्य समाजातर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली..! शोकाकुल कुटुंबियांच्या दु:खात आर्यजन सहभागी आहेत...

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा - निवेदन

१) सभेतर्फे नुकत्याच संपन्न झालेल्या श्रावणी वेदप्रचारासंदर्भात आर्य समाजाच्या कार्यकर्त्यांनी आपल्या सूचना सभेला कळवाव्यात.

२) येत्या नोव्हेंबर व डिसेंबर महिन्यात विद्यार्थ्यांसाठी आयोजित वक्तृत्त्व स्पर्धांसाठी सर्व आर्य समाजांनी विद्यार्थी पाठवावेत.

३) डिसेंबर २०१९ मध्ये शाळा-महाविद्यालयांसाठी आयोजित 'वैदिक व्याख्यानमाला' अभियानास सर्वांनी सहकार्य करावे.

४) आगामी विधानसभा निवडणूकीत आर्य कार्यकर्त्यांनी आपल्या परिसरातील राजकीय पक्षाचा विचार न करता निर्व्यसनी, सदाचारी, राष्ट्रभक्त, भ्रष्टाचार विरहित अशा स्वच्छ प्रतिमा असलेल्या उमेदवारासच निवडून द्यावे.

- वैदिक गर्जना सूचना -

वैदिक मानवतेचे तत्त्वज्ञान व विचार आणि आर्य समाजाचे विविध कार्यक्रम जाणून घेण्याकरिता सूज्ञ वाचकांनी रू.१००० सभेकडे पाठवून 'वैदिक गर्जना' या मासिकाचे आजीवन सदस्य व्हावे. तसेच ज्या ग्राहकांना हे मासिक मिळत नसेल त्यांनी सभाव्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार(मो.९४२३४७२७९२) यांचेशी संपर्क करावा.

एस.बी.आय.परळी खाते क्र.11154152843 IFSC Code-SBIN0003406

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

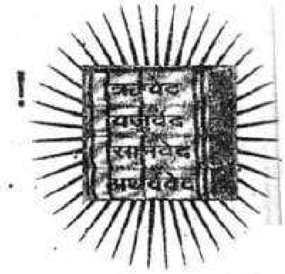

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
ार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- ‘वैदिक गर्जना’ मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-‘मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर’
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

धर्माबाद में भजन प्रस्तुत करते हुए पं.प्रदीपजी आर्य। साथ में हैं वैदिक विद्वान पं.शिवकुमारजी शास्त्री।

लातूर में आर्यों को सम्बोधित करते हुए स्वामी अखिलानन्दजी सरस्वती।

वारजे–पुणे में व्याख्यान देते हुए वैदिक विद्वान पं.ब्रिजेशजी शास्त्री। साथ में हैं भजनोपदेशक पं.ऋषिपालजी पथिक।

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/24/2018-2020

सेवा में,
श्री. ____________________

____

____

____

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धाञ्जलि !

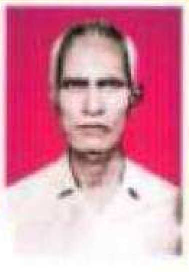

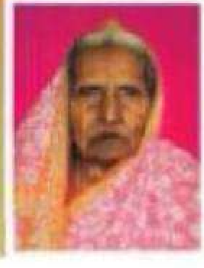

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के स्वाधीनता सैनिक,
हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रही,
लोकमान्य शिक्षण संस्था, पानचिंचोली (जि.लातूर)
के संस्थापक, समाजसेवी व्यक्तित्व
पिताजी स्व.श्री.वासुदेवराव हनुमंतराव होलीकर एवं
माताजी स्व.श्रीमती रुक्मिणीदेवी वासुदेवराव होलीकर
की पावन स्मृति में उनके सुपुत्र प्रो.ओमप्रकाशजी होलीकर एवं परिवार
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मलपृष्ठ भेंट